सिटींग बुल

डेविड, चित्र: समुएल, हिंदी: विदूषक

सिटींग बुल एक हंकअप्पा सिओउक्स थे – पश्चिमी सिओउक्स की सात जनजातिओं में से एक. उनका जन्म 1831 में हुआ. उसके बाद वो एक मशहूर परंपरागत वैद्य और लीडर बने. जैसे-जैसे गोरे लोग और अमरीकी फौज, सिओउक्स इलाके में प्रवेश करती गई और वहां पर जिंदा रहने के लिए अनिवार्य जंगली भैंसों को मारती गई, वैसे-वैसे सिटींग बुल ने अपने लोगों की रक्षा की. सिटींग बुल ने सिओउक्स लोगों की ज़मीन को अमरीकी सरकार को देने से इंकार किया. उन्होंने "रिजर्वेशन" में रहने से भी मना किया. 25 जून, 1876 की लड़ाई में एक ओर आदिवासी - सिओउक्स थे, दूसरी ओर अमरीकी लेफ्टिनेंट कर्नल जॉर्ज आर्मस्ट्रांग और उनकी सेना थी. उस लड़ाई में आदिवासियों ने अमरीकी फौज को हराया. पर अगले कुछ महीनों में सिटींग बुल ने अपने लोगों को युद्ध और बीमारियों से मरते हुए देखा. 15 दिसम्बर, 1890 को सरकारी एजेंट्स ने सिटींग बुल को गिरफ्तार किया और उन्हें मार डाला.

सिटींग बुल

डेविड, चित्र: समुएल, हिंदी: विदूषक

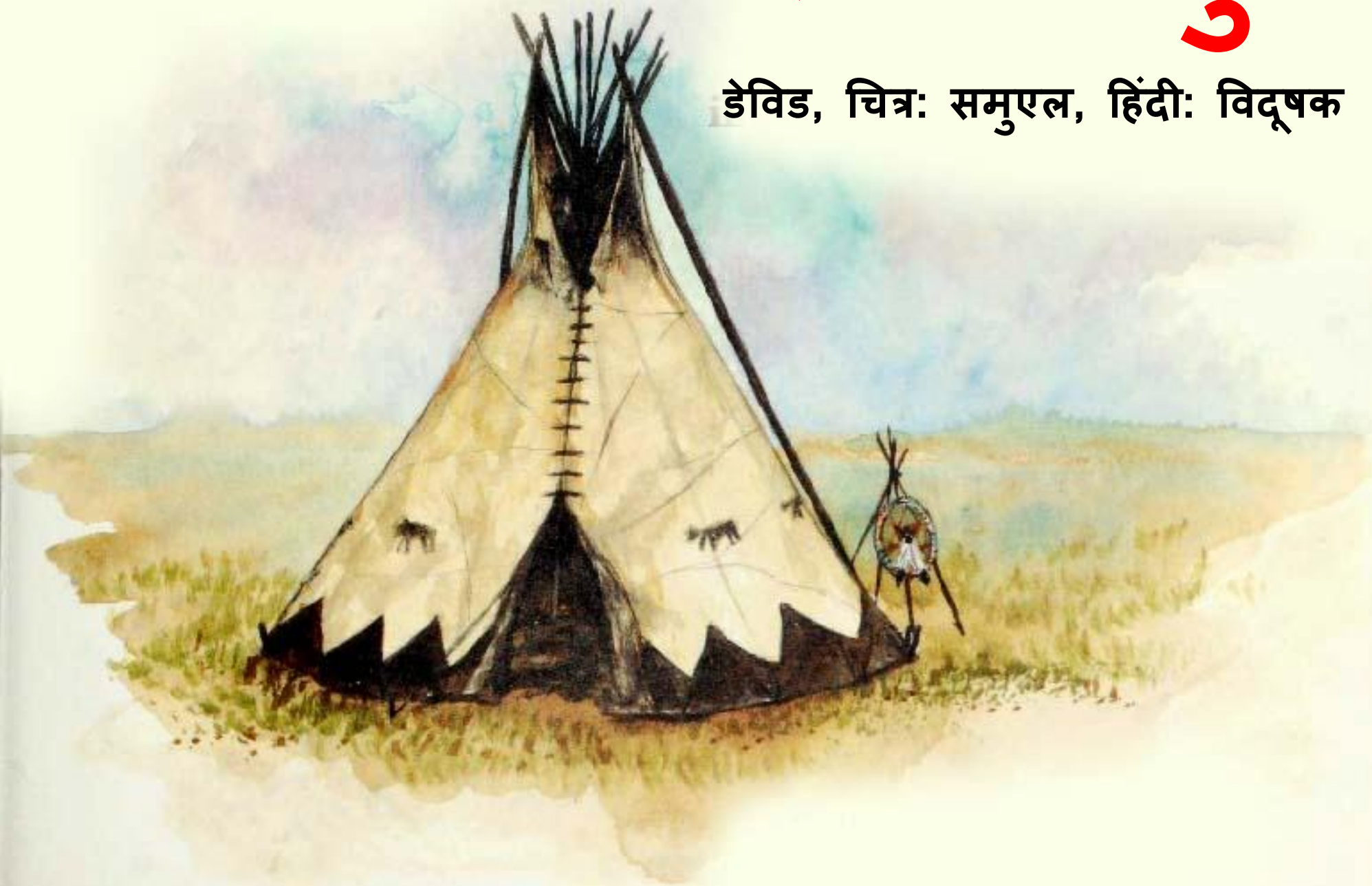

सिटींग बुल मूल अमरीकी आदिवासी (नेटिव अमेरिकन) थे. वो हंकअप्पा सिओउक्स थे - पश्चिमी सिओउक्स की सात जनजातिओं में से एक. उनका जन्म 1831 में ग्रैंड रिवर के पास हुआ था. अब यह इलाका साउथ-डकोटा कहलाता है.

जब सिटींग बुल युवा थे तो उस इलाके में, जंगली भैंसों के झुण्ड मुक्त घूमते थे. सिओउक्स लोग भैंस का मांस खाते थे, भैंस की खाल से चादर, कपड़े और रहने के लिए "टेप्पी" (घर) बनाते थे. वो भैंस के सींघों से चम्मच और कप और बालों से रस्सी और बेल्ट बुनते थे. वो कुछ भी बेकार नहीं करते थे और गिनती के केवल उतने ही भैंसों का शिकार करते थे, जितने उनके जिंदा रहने के लिए ज़रूरी होते थे. सिटींग बुल जब दस साल का था तब उसने पहले भैंस का शिकार किया.

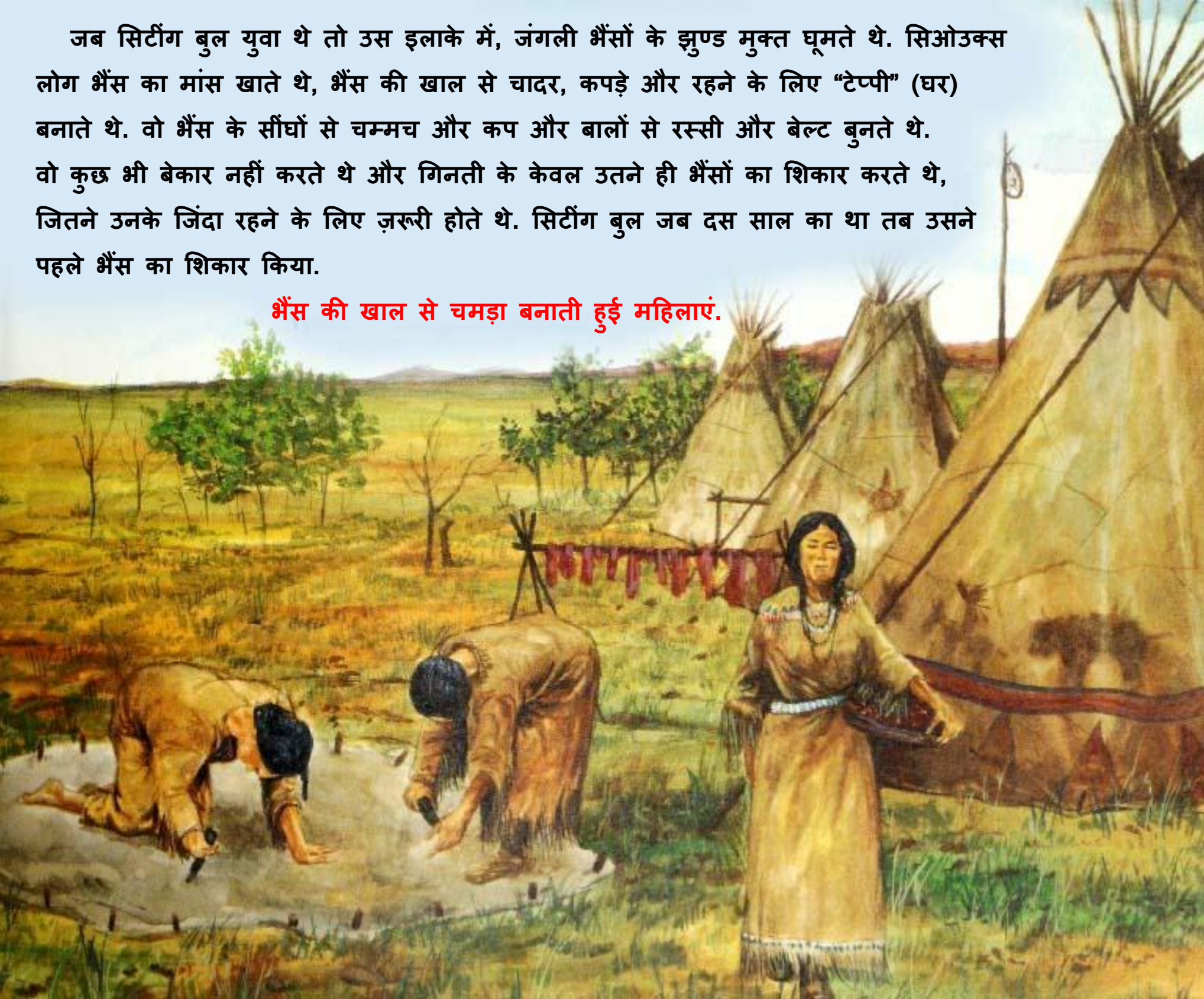

भैंस की खाल से चमड़ा बनाती हुई महिलाएं.

सिटींग बुल को पहले “स्लो” (धीमा) नाम दिया गया, क्योंकि वो किसी काम में जल्दी नहीं दिखाता था. उसकी माँ (मिक्स्ड-डेज) और पिता (रिटर्न्स-अगेन) की दो और बेटियां थीं. सिटींग बुल - “स्लो” उनका एकमात्र पुत्र था.

जब वो चौदह साल का था तब “स्लो” ने “क्रो” नाम की दुश्मन जनजाति के साथ, अपनी पहली लड़ाई लड़ी. उसने युद्ध के रंग अपने मुंह पर पोते. फिर अन्य अनुभवी सिओउक्स योद्धाओं के साथ उसने लड़ाई में भाग लिया. उसके हाथ में एक लम्बा डंडा था जिसके एक सिरे पर एक चिड़िया का पंख था. दुश्मन को अपने डंडे से छू पाना बहादुरी की बड़ी निशानी माना जाता था.

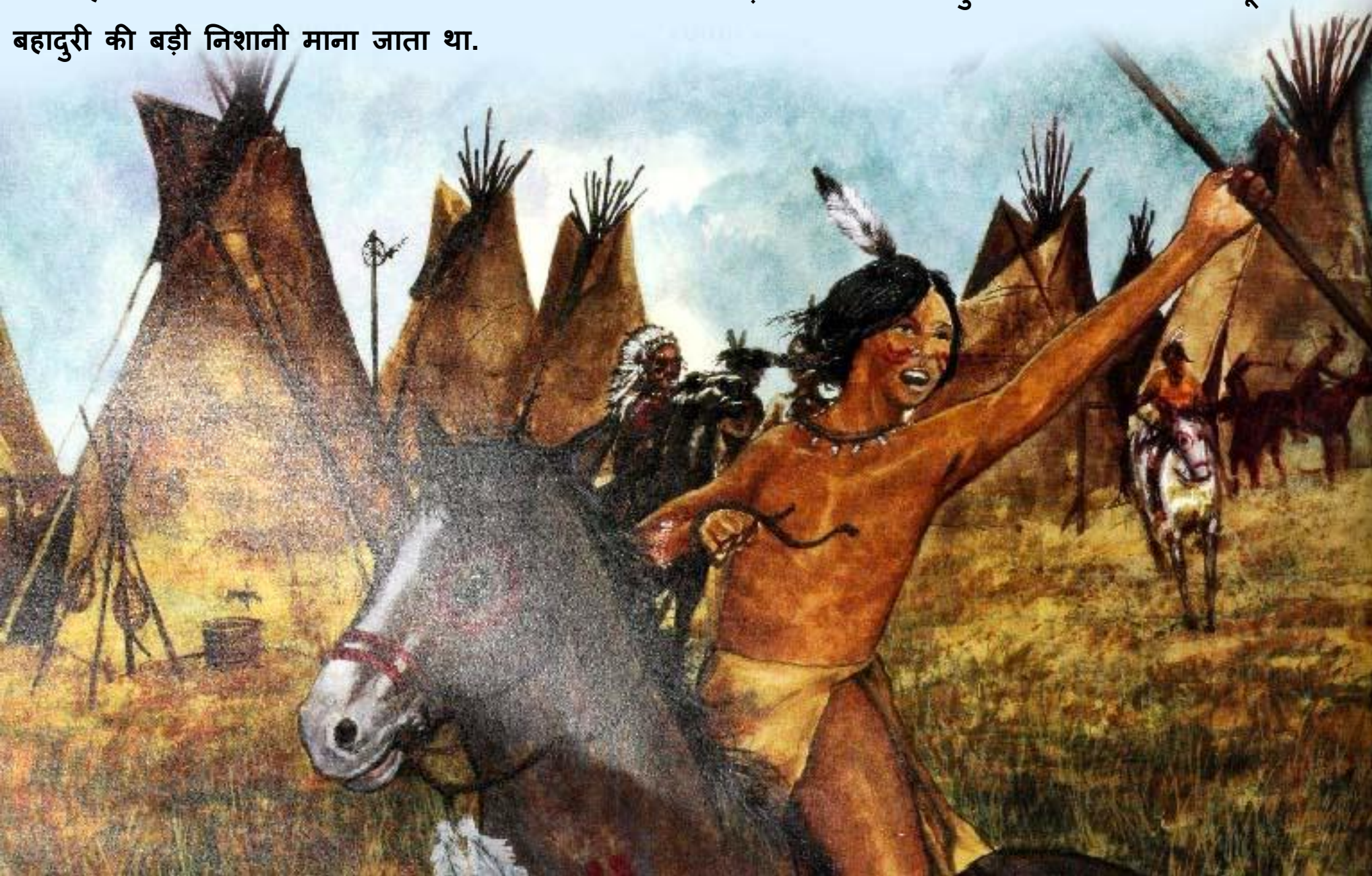

जब “स्लो” ने दुश्मन देखा तो वो बहुत तेज़ी के साथ उसकी ओर बढ़ा. उसने “क्रो” योद्धा पर वार किया जिससे उसका तीर-कमान ज़मीन पर गिर गया. “रिटर्न्स-अगेन” ने अपने बेटे के बारे में कहा, “मेरा बेटा बहादुर है. आज से मैं उसका नाम “सिटींग बुल” रखता हूँ.”

“रिटर्न्स-अगेन” के लिए वो नाम बहुत मायने रखता था. बहुत साल पहले, उसके सामने एक विशाल भैंसा आया. उसने यह शब्द कहे, “सिटींग बुल, जम्पिंग बुल, बुल विद काव, बुल आल अलोन.” “रिटर्न्स-अगेन” को लगा कि वे शब्द सीधे भैंस भगवान ने उससे कहे थे.”

शुरू में उसने अपना नाम “सिटींग बुल” रखा. पर जब उसके बेटे ने इतनी बहादुरी दिखाई तब उसने यह नाम अपने बेटे को दिया, और खुद का नाम बदलकर “जम्पिंग बुल” रखा.

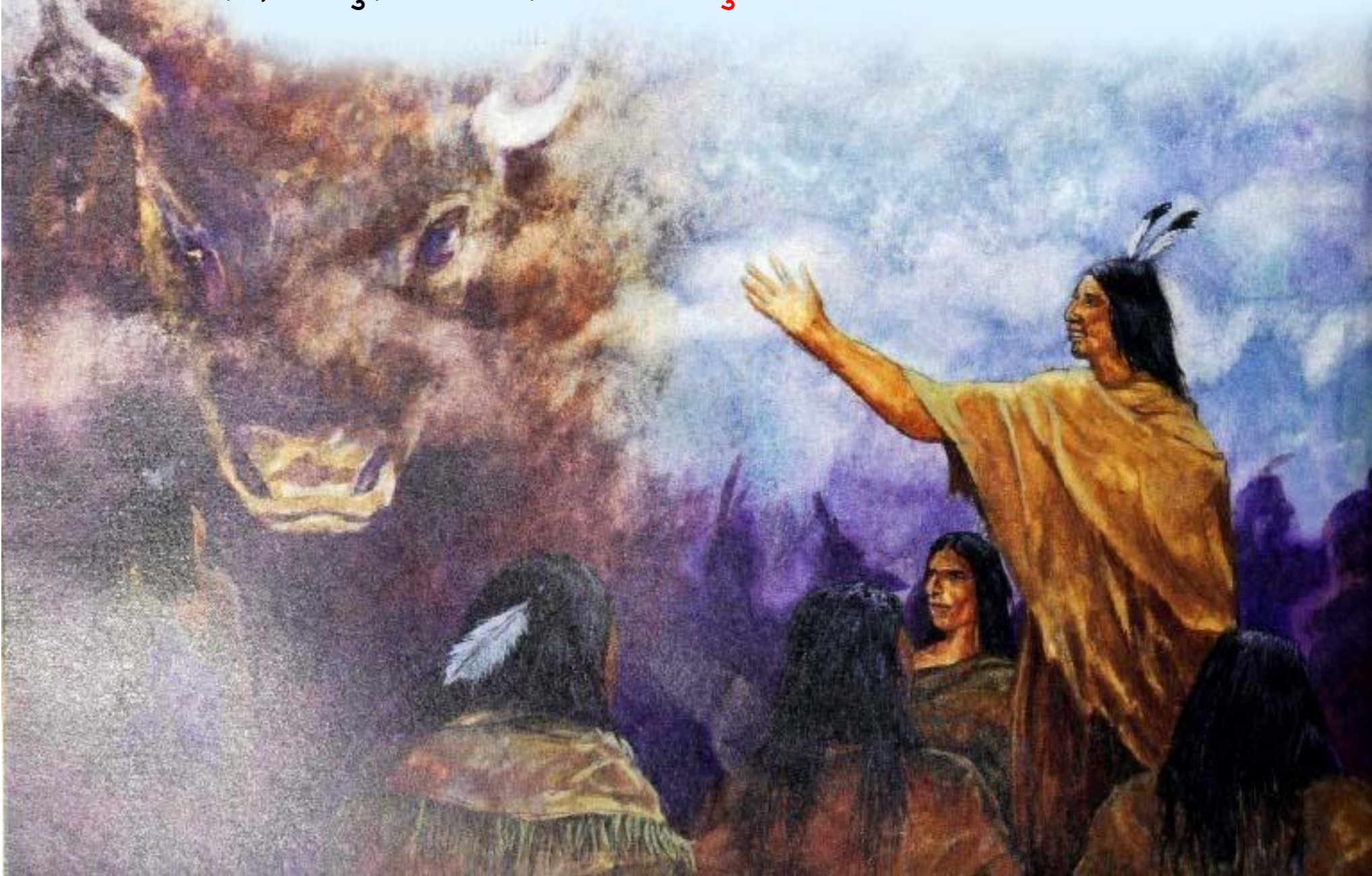

बहुत साल बाद सिटींग बुल ने शादी की. उसकी पहली पत्नी का नाम था “स्कारलेट वुमन”. उनके एक बेटा हुआ. पर अगले साल इतनी कड़क सर्दी पड़ी कि उसमें “स्कारलेट वुमन” और बेटे दोनों का देहांत हो गया.

हंकअप्पा सिओउक्स लोगों के लिए कई पत्नियाँ रखना एक आम बात थी. अक्सर वहां एक से ज्यादा पत्नियाँ रखने की परंपरा थी. “स्कारलेट वुमन” की मृत्यु के बाद सिटींग बुल की बहुत पत्नियाँ थीं जिनसे उसके कई बच्चे हुए.

“सिटींग बुल” अपनी दो पत्नियों और बच्चों के साथ

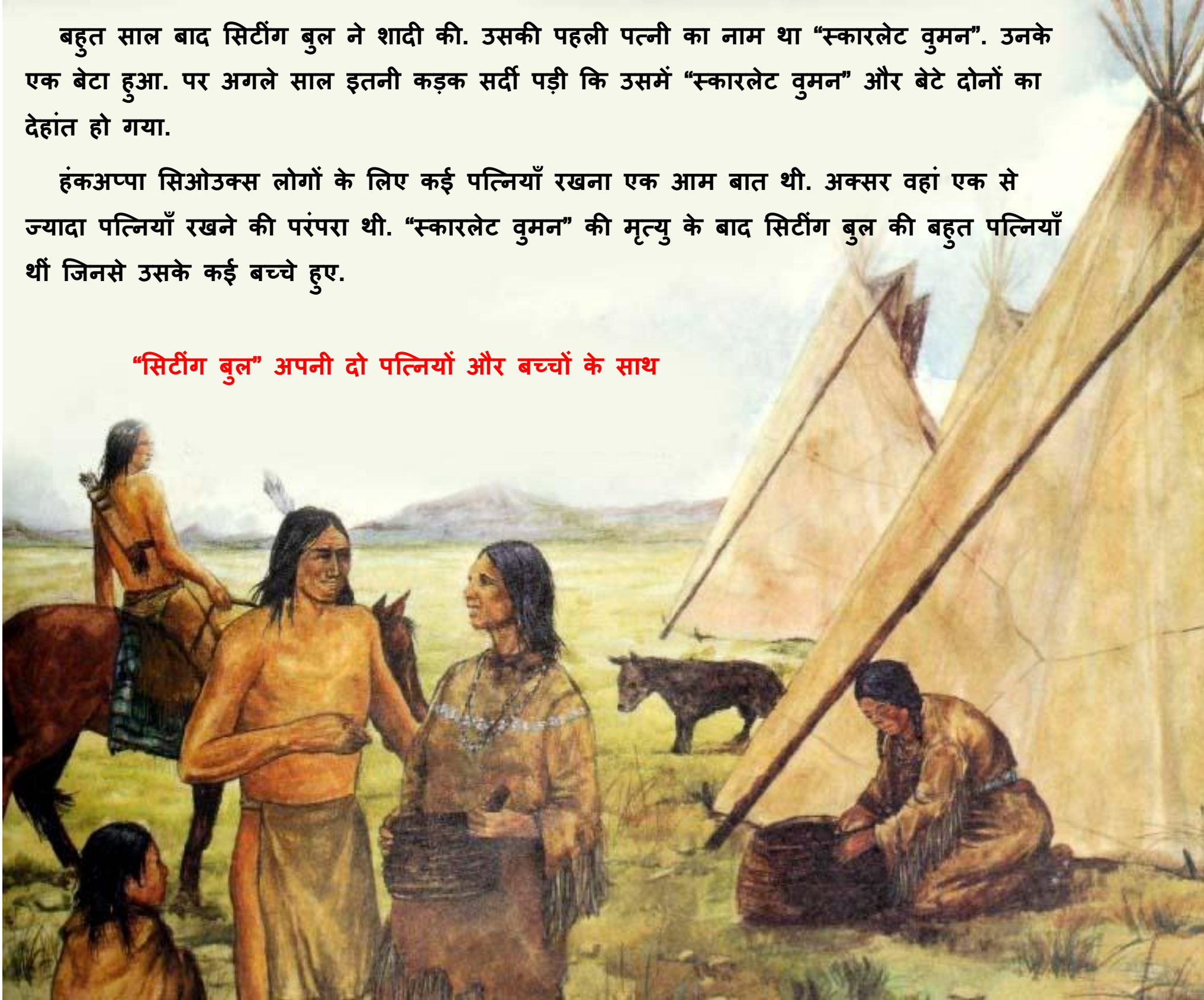

सिटींग बुल भविष्य की घटनायों के बारे में अपनी राय प्रकट करता था. जब उसकी भविष्यवानियाँ ठीक निकलने लगीं तो लोग उसे “दवाई वाला उपचारक” और एक धार्मिक गुरु या “पैगम्बर” मानने लगे.

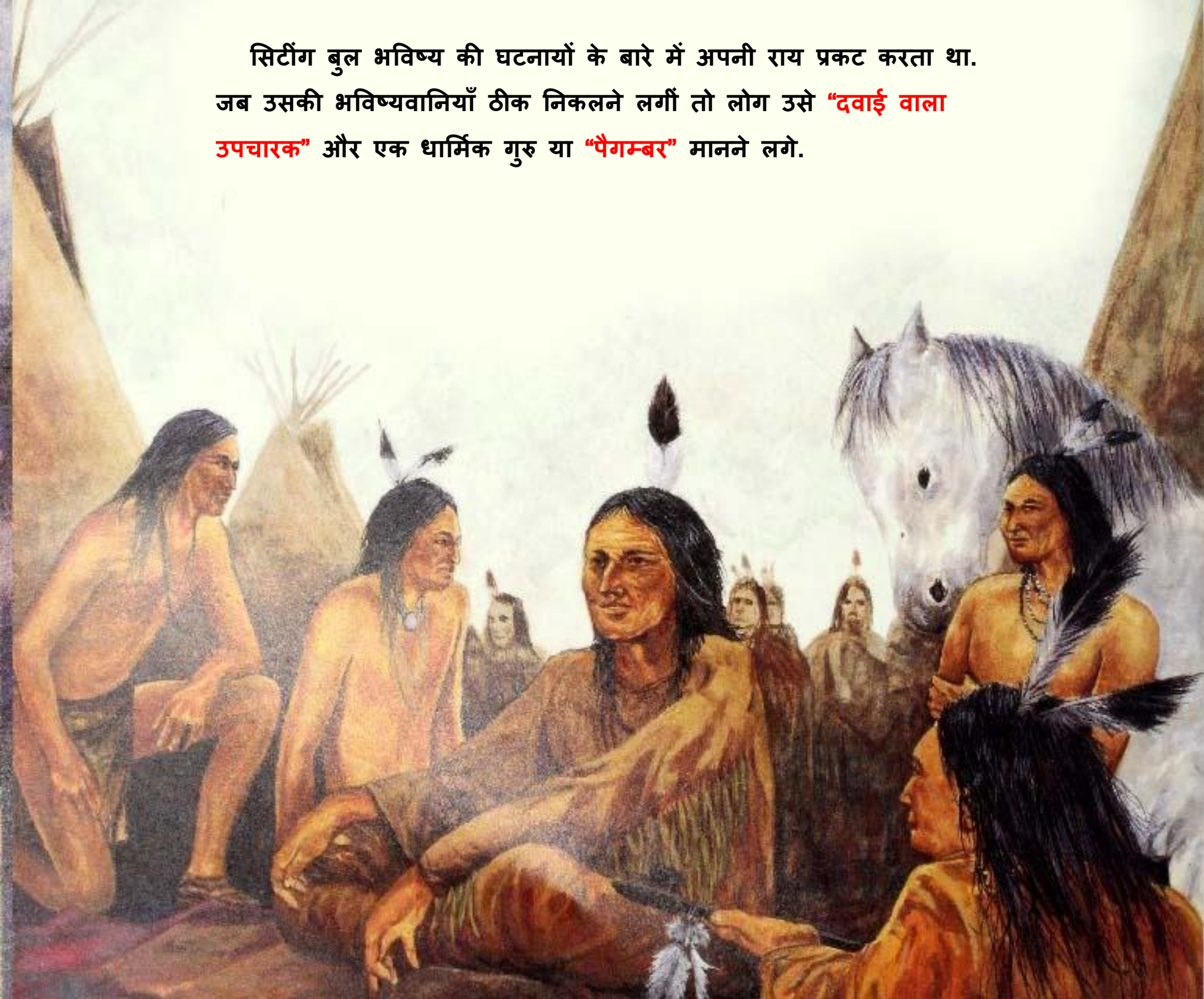

अपने यौवन में सिटींग बुल ने सबसे ज्यादा लड़ाइयां अन्य मूल अमरीकी जनजातियों के साथ ही लड़ीं. जब सिटींग बुल बड़ा हुआ तो उसकी लड़ाइयां गोरे लोगों और अमरीकी सरकार के खिलाफ थीं, क्योंकि वे उसके लोगों की ज़मीन हड़प रहे थे.

शुरू में सिटींग बुल को जो गोरे दिखे वे केवल व्यापारी थे. पर 1840 के बाद बहुत से अमरीकी पायनियर्स ने पश्चिम की ओर अपना रुख किया. वे सिओउक्स लोगों के इलाकों से गुज़रे और वहां पर उन्होंने अपने घर, शहर और किले बनाए. उन्होंने चमड़े और शिकार के लिए लाखों जंगली भैंसों को भी क़त्ल किया. 1880 तक जंगली भैंसों के झुण्ड लगभग लुप्त हो चुके थे. भैंसों के ख़त्म होने के साथ-साथ मूल अमरीकी जनजातियों की जीवन शैली और सभ्यता भी नष्ट होने की कगार पर थी. उसके कारण कई युद्ध हुए.

सिटींग बुल को गोरे लोगों के तौर-तरीकों से चिढ़ थी. उसने अपने लोगों को ललकारा और मूल अमरीकी लोगों की ज़मीन से, गोरों को उखाड़ फेंकने का आवाहन दिया. अमरीकी सरकार और नेटिव अमेरिकंस के बीच शांति के कई समझौते हुए पर गोरों ने उनका बार-बार उल्लंघन किया.

नवम्बर 1868 में, एक और संधि लिखी गई. "शांति" बरक़रार रखने के लिए नेटिव अमेरिकंस ने कुछ ज़मीन अपने पास रखी और बाकी ज़मीन अमरीकी सरकार को सौंप दी. जो ज़मीन जनजातियों के कब्ज़े में थी उसे "ग्रेट सिओउक्स रिजर्वेशन" का नाम दिया गया. इस संधि पर बहुत से सिओउक्स लीडर्स ने हस्ताक्षर किए पर सिटींग बुल ने ऐसा नहीं किया.

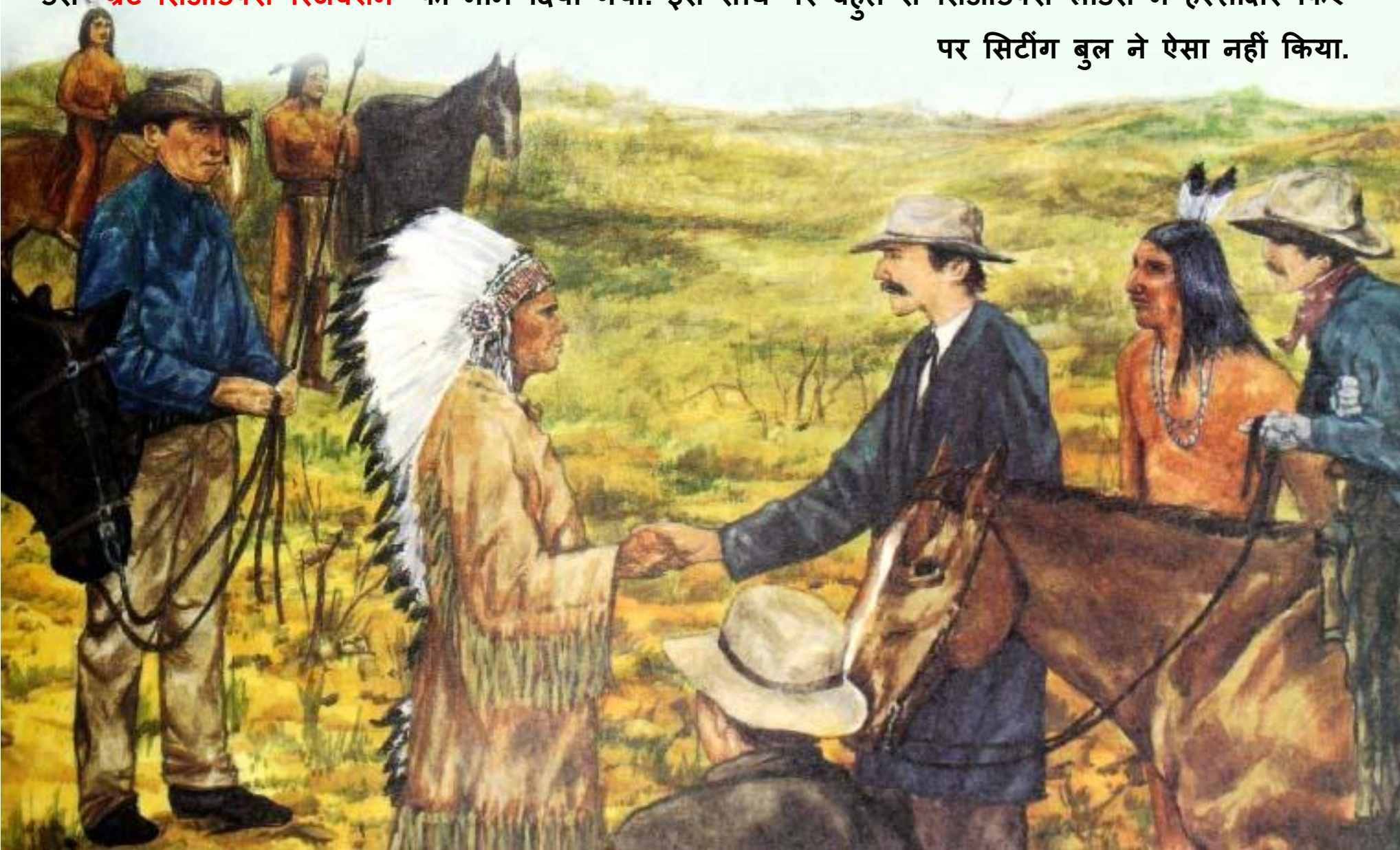

सिटींग बुल बहुत आत्म-सम्मानी था. उसे अपने लोगों, उनकी सभ्यता और संस्कृति पर गर्व और नाज़ था. “मैं अपने लोगों को लुटने नहीं दूंगा,” सिटींग बुल ने कहा. वो सिओउक्स लोगों की ज़मीन, गोरों को देने को बिल्कुल तैयार नहीं था. उसने “आरक्षित” ज़मीन या “रिजर्वेशन” पर रहने से भी इंकार किया.

संधि पर हस्ताक्षर करने के बाद गोरे लोगों ने उसे तोड़ा. सोने की खोज में सैकड़ों गोरे, नेटिव अमेरिकंस की आरक्षित पवित्र “ब्लैक हिल्स” में घुसे.

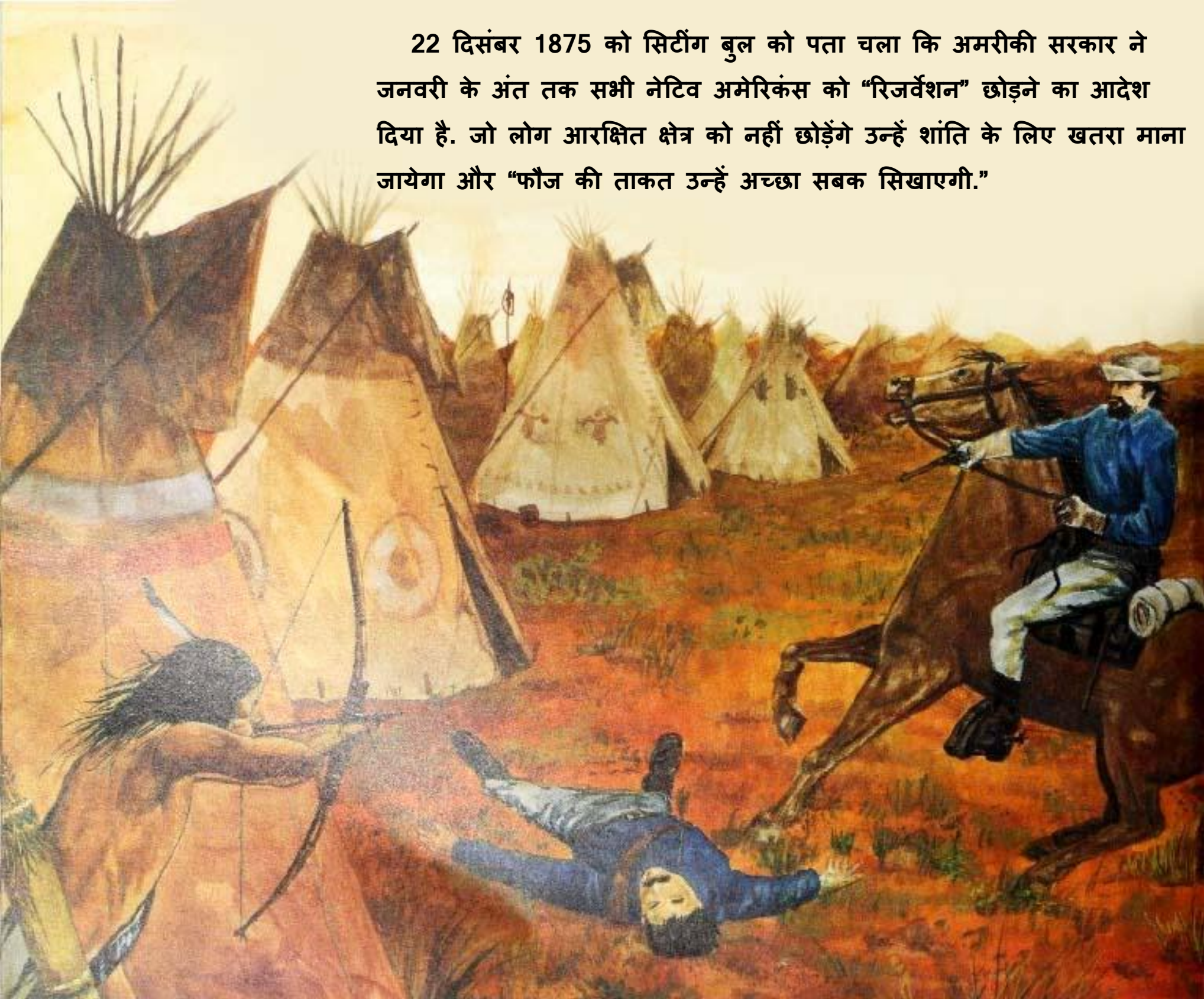

22 दिसंबर 1875 को सिटींग बुल को पता चला कि अमरीकी सरकार ने जनवरी के अंत तक सभी नेटिव अमेरिकंस को “रिजर्वेशन” छोड़ने का आदेश दिया है. जो लोग आरक्षित क्षेत्र को नहीं छोड़ेंगे उन्हें शांति के लिए खतरा माना जायेगा और “फौज की ताकत उन्हें अच्छा सबक सिखाएगी.”

सरकार के इस आदेश को मानना एकदम असंभव था. 1875 के दिसंबर में बहुत कड़ाके की सर्दी पड़ी थी. सिटींग बुल पाउडर रिवर में रहते थे. वहां से “रिजर्वेशन” के बीच लगभग 200-मील का इलाका मोटी बर्फ की परत से ढंका था. सिटींग बुल ने कहा, “उन्हें युद्ध चाहिए. ठीक है, हम उनके साथ लड़ेंगे!”

वसंत में नेटिव अमेरिकंस के अन्य बहुत से लीडर सिटींग बुल और उसके सिओउक्स योद्धाओं से आकर जुड़े. सिटींग बुल ने उनसे कहा, “हमें एक-दूसरे के साथ मिलकर लड़ना चाहिए नहीं तो वे हमें अकेले, एक-एक करके मार देंगे.”

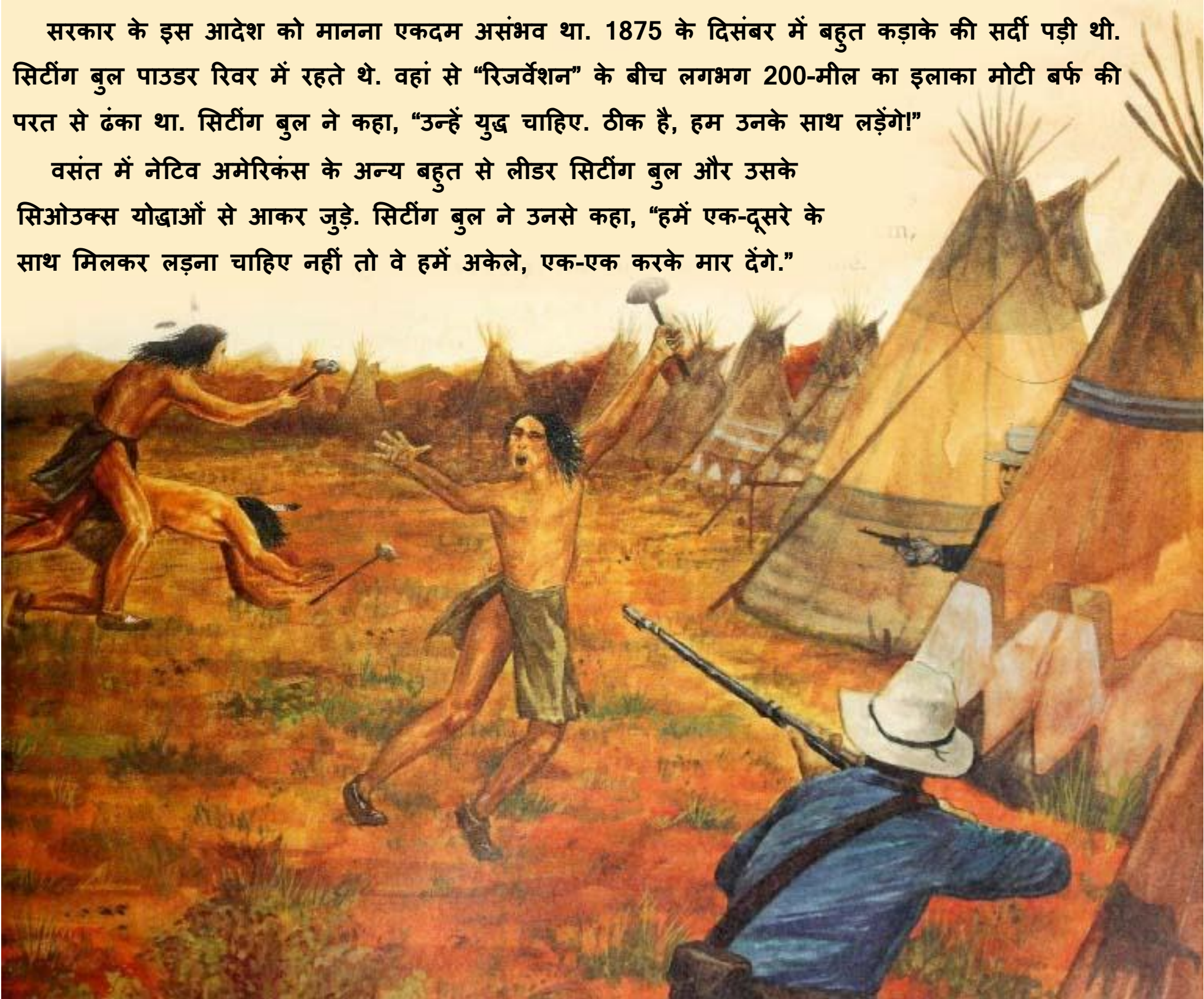

सिटींग बुल ने उसके बाद सूर्य-नृत्य किया. यह एक धार्मिक अनुष्ठान था. इसमें उसके शरीर में लकड़ियां घुसाई गईं और उसे एक खम्बे से बाँधा गया. फिर वो दो दिनों तक बिना भोजन और पानी के नाचता रहा. अंत में जब वो थक कर गिरा तब उसे एक नई दृष्टि सूझी.

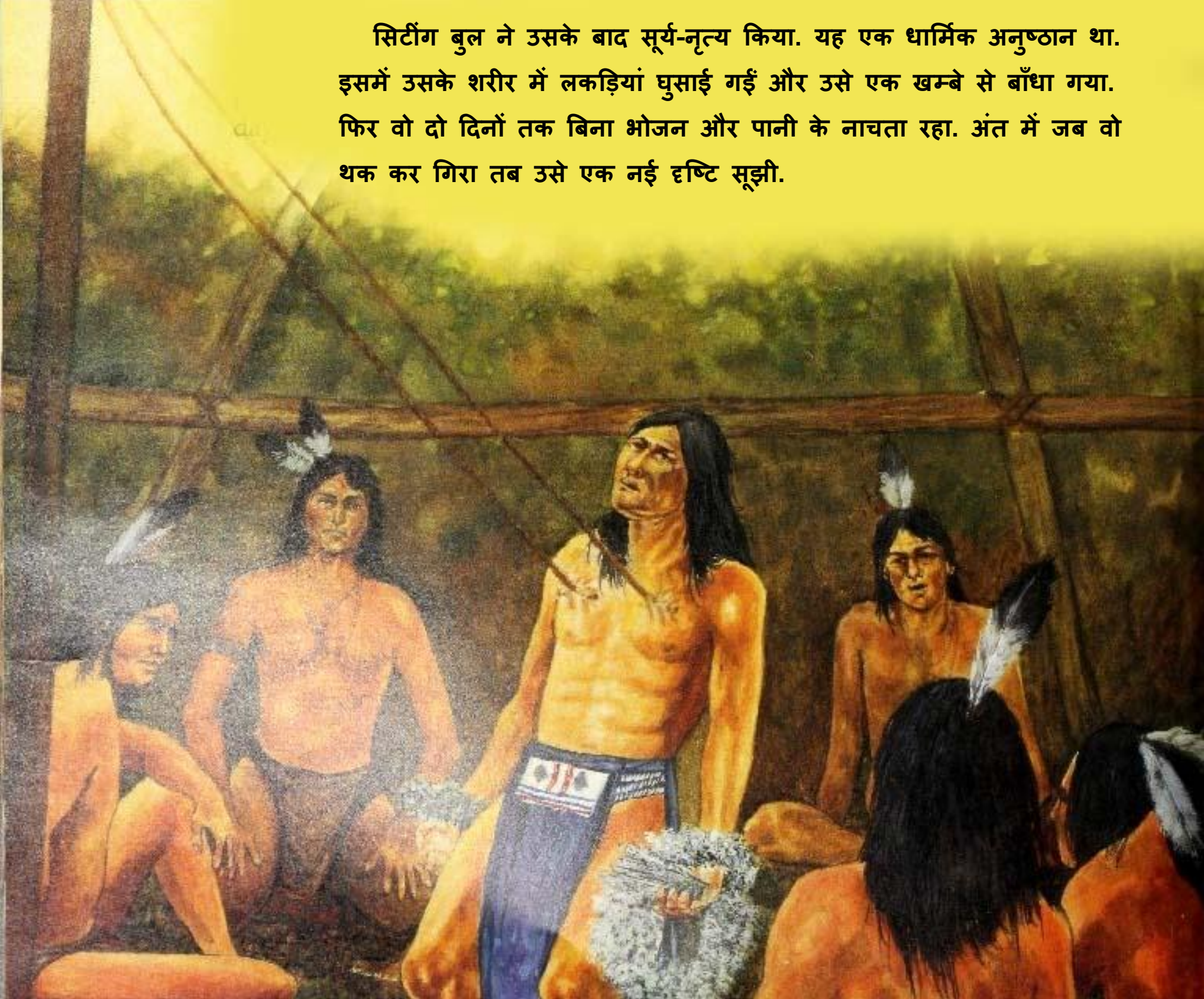

उसे घोड़ों की पीठ पर सवार फौज़ी दिखे. उनकी गर्दनें लटकी थीं और टोपियाँ हवा में उड़ रही थीं. वे फौजी आसमान से टिड्डों जैसे गिर रहे थे. महान-आत्म “वाकन-टंका” ने सिटींग बुल को यह सन्देश भेजा था. इस लड़ाई में नेटिव अमेरिकंस को भारी जीत मिलेगी.

सिटींग बुल ने अपने लोगों को इस लड़ाई से मुनाफा कमाने से मना किया. “दुश्मनों की बंदूकें और उनके घोड़े मत छीनना... अगर तुमने गोरे लोगों की चीज़ों पर अपनी नज़र डाली तो वो हम लोगों के लिए शाप साबित होंगी.”

25 जून, 1876 को, लिटिल बिगहॉर्न नदी, मोंटाना में नेटिव अमेरिकंस ने अमरीकी फौज के लेफ्टिनेंट कर्नल जॉर्ज आर्मस्ट्रांग कस्टर और उसके 100 सैनिकों को मार डाला. इस लड़ाई का नाम **"बैटल ऑफ़ लिटिल बिगहॉर्न"** या **"कस्टर की आखरी जंग"** पड़ा.

यह सिओउक्स लोगों की आखरी बड़ी जीत थी.

उसके बाद महीनों तक अमरीकी फौज ने सिओउक्स को खदेड़ा, उनके कैम्प्स को जलाया और उनके परिवारों को क़त्ल किया. उसके बाद सिओउक्स का “आरक्षित” क्षेत्र और छोटा हुआ. सिओउक्स की बहुत सी ज़मीन छीनी गई जिसमें “ब्लैक हिल्स” भी शामिल थी.

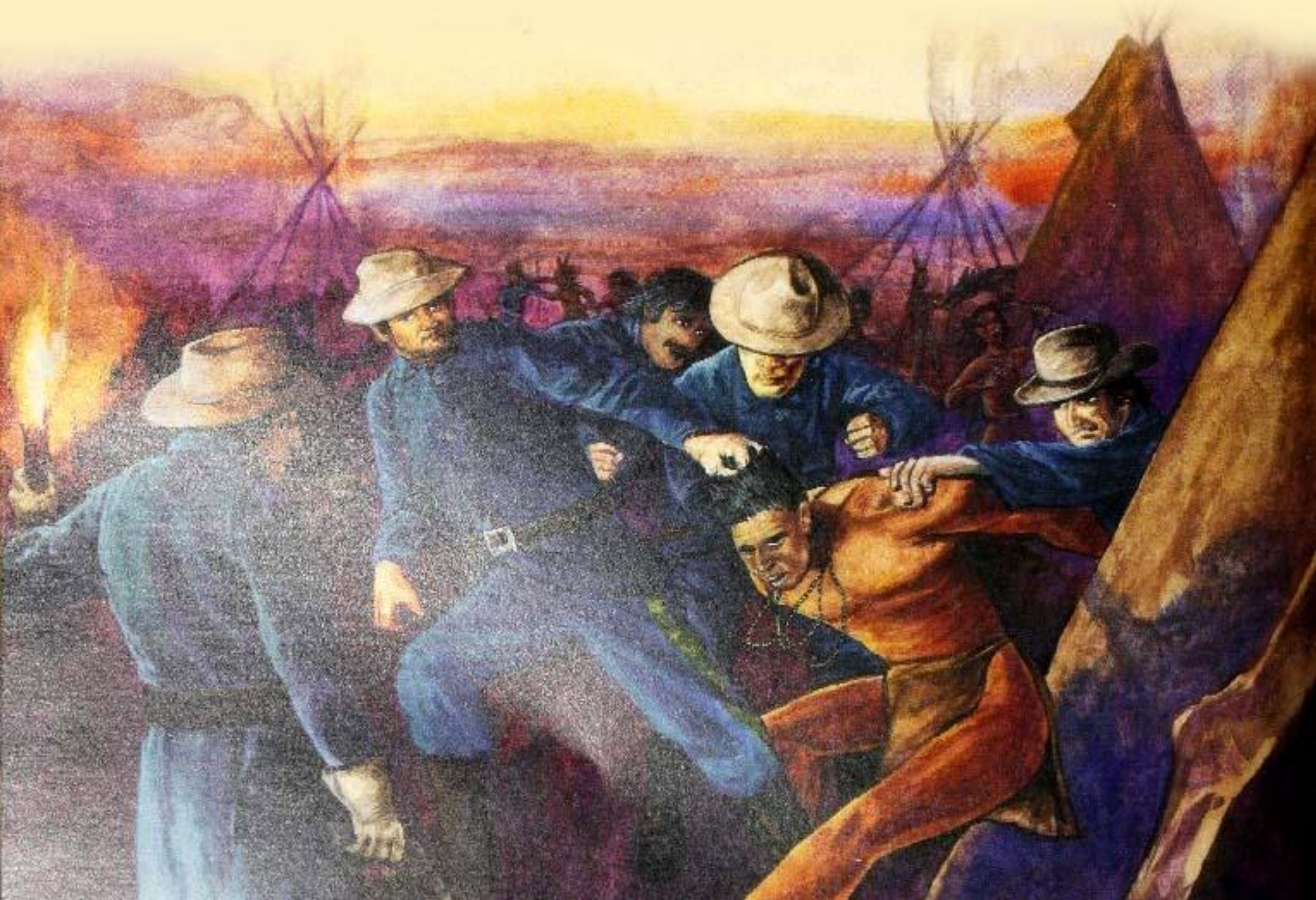

1877 में सिटींग बुल हंकअप्पा सिओउक्स को, उत्तर में कनाडा ले गया.

वैसे तो वहां शांति थी पर वहां जंगली भैंसों का अभाव था. 1881 की सर्दी, बहुत ही कठोर और कड़ाके की थी और हंकअप्पा सिओउक्स के पास खाने को बहुत कम बचा था. इसलिए 1881 में, सिटींग बुल और भूखे-प्यासे और कमज़ोर हंकअप्पा सिओउक्स लोग अमरीका लौटे.

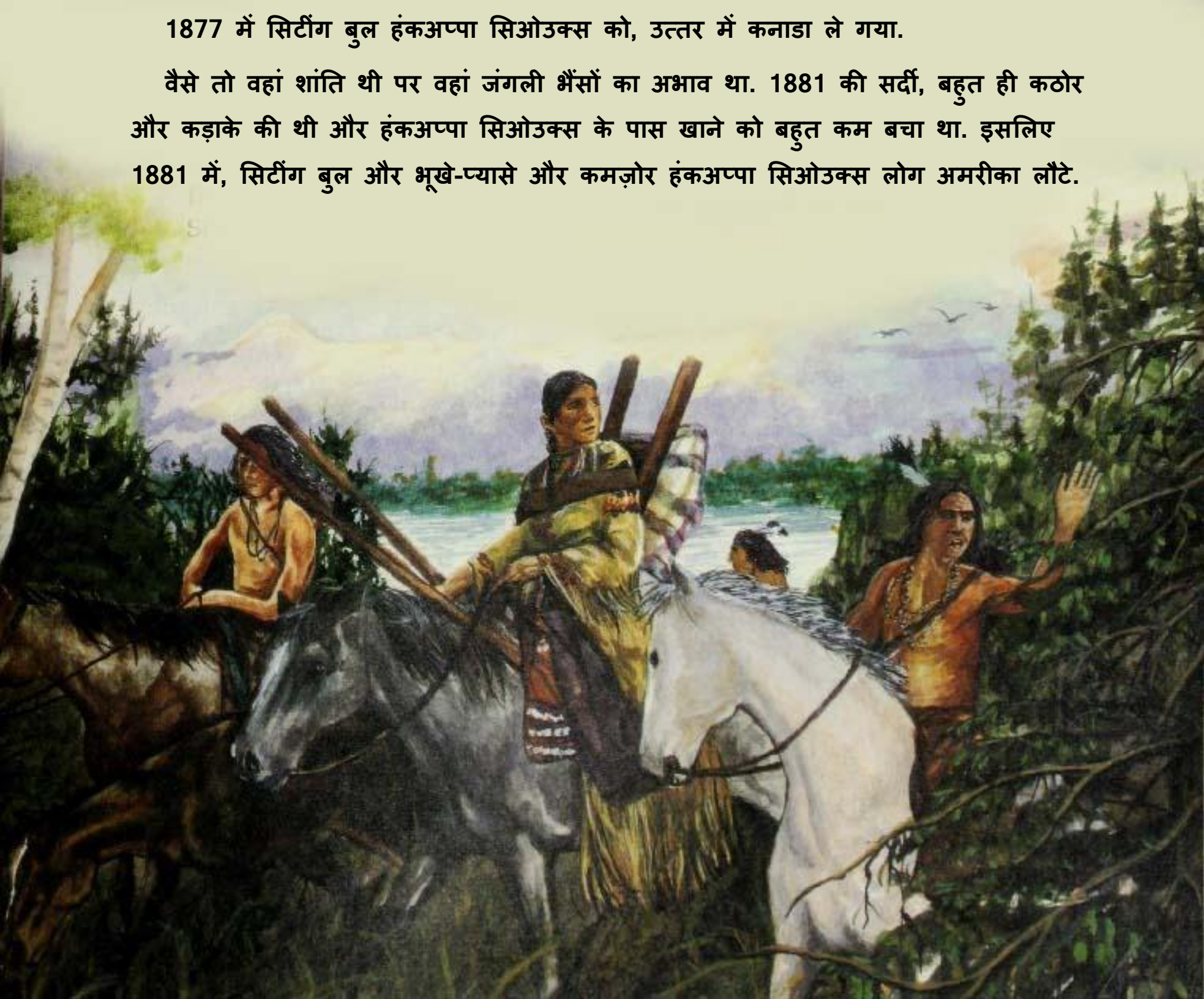

अमरीका में सिटींग बुल को गिरफ्तार किया गया और उसे 1883 तक फोर्ट बुफोर्ड और फोर्ट रनडेल में कैद रखा गया. उसके बाद उसे जोर-ज़बरदस्ती “आरक्षण” में रहने को मजबूर किया गया.

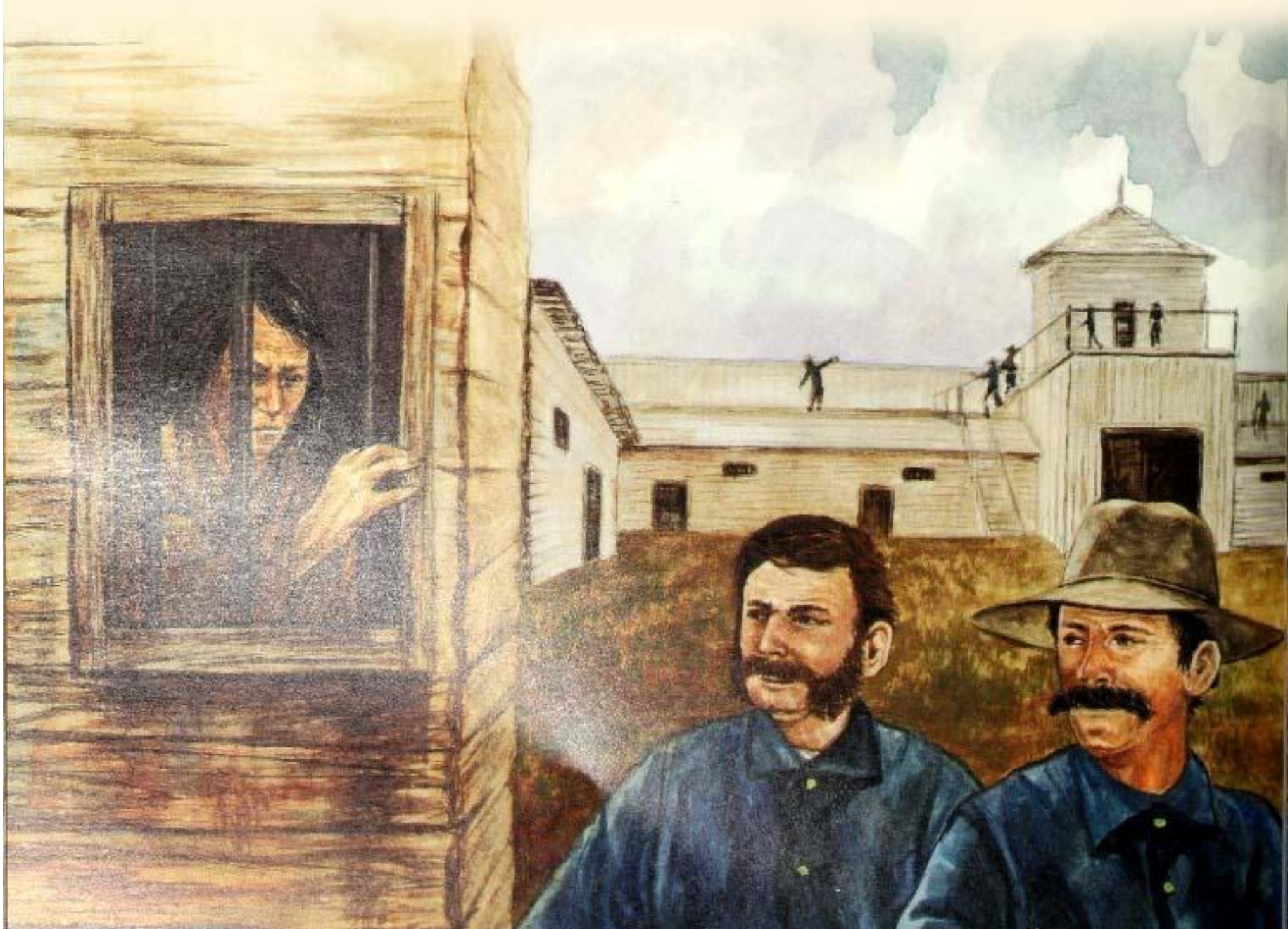

1885 में सिटींग बुल ने अपने साथियों - बफैलो बिल कोडी और एनी ओक्ले के साथ मिलकर वाइल्ड वेस्ट शो में भाग लिया.

सिटींग बुल ने पूर्व के कई शहरों का दौरा किया. हजारों लोग सिटींग बुल को देखने आए. लोगों ने सिटींग बुल को ओटोग्राफ्स के लिए घेरा. इस दौरे में सिटींग बुल ने जो पैसा कमाया वो उसने गरीब बच्चों में बाँट दिया.

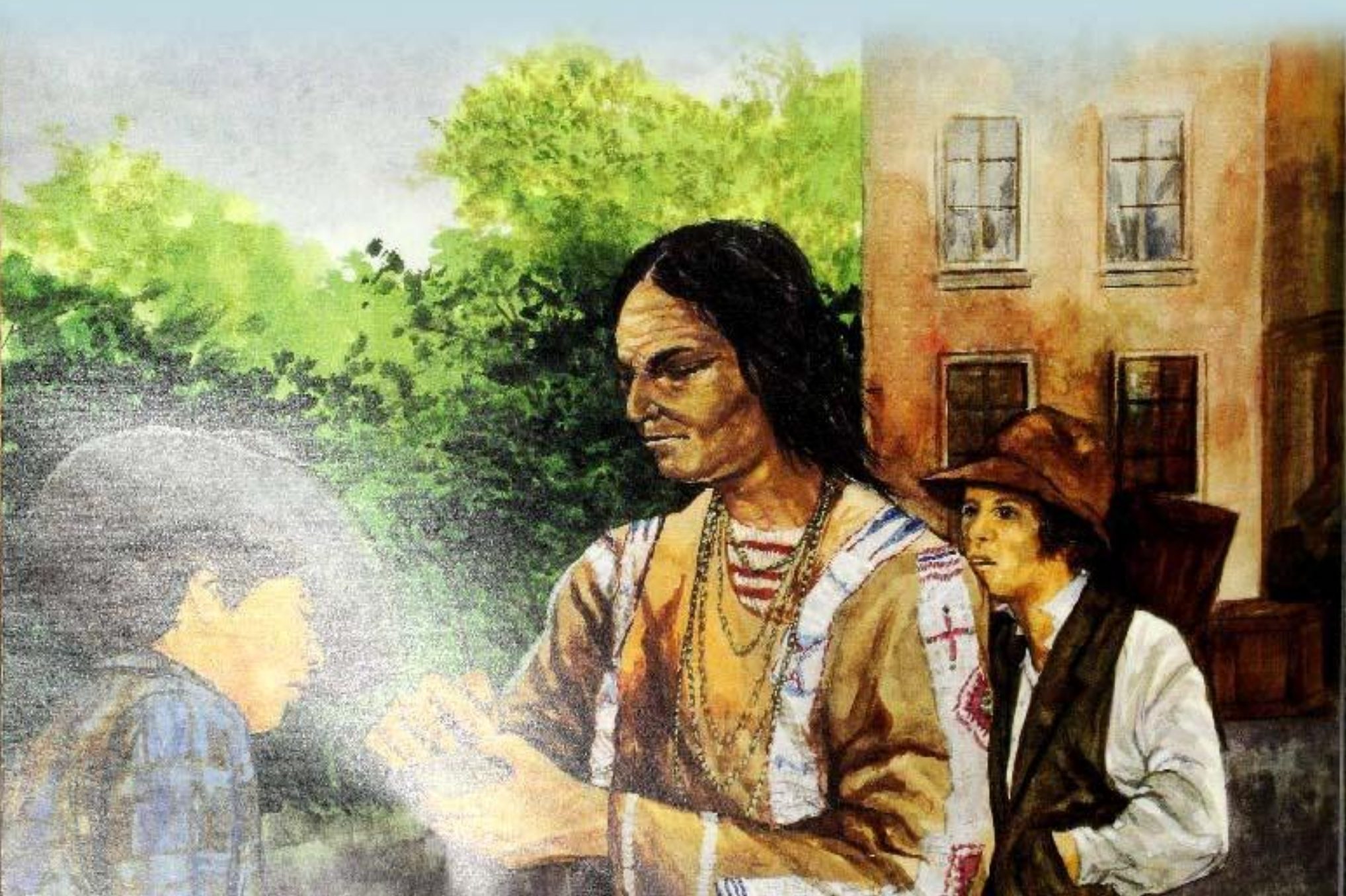

सिटींग बुल का यह दौरा, अनेक शहरों में, साल भर तक चला. अंत में वो शहरों की भीड़ और शोर से तंग आ गया. 1889 में अमरीकी सरकार ने 1868 की संधि को दुबारा तोड़ा. उसके बाद सिओउक्स लोग अपनी ज़्यादातर ज़मीन गोरे उपनिवेशकों को बेचने को मजबूर हुए. वो समय नेटिव अमेरिकंस ने लिए बहुत मुश्किल था. उनके लिए "आरक्षित" क्षेत्रों में पानी और भोजन की भयंकर किल्लत थी. वहां सिर्फ बीमारियों का ही बोलबाला था.

1890 में वोयोका – पैयुत नेटिव अमेरिकन ने अपने लोगों से “भूत-नृत्य” करने को कहा जिससे वे अपने मरे पुरखे वापिस ला सकें. उससे भैंसों के झुण्ड और बाढ़ आती जिसमें गोरे डूब कर मर जाते. सिटींग बुल को मरे लोगों के जिंदा होकर वापिस आने पर कोई यकीन नहीं था. पर उसे लगा कि शायद वो नृत्य, उसके लोगों में उम्मीद की एक किरण जगा सके. कुछ समय बाद हजारों सिओउक्स लोग बेताबी से अंधाधुंध नाचने लगे. सरकारी एजेंट्स को वो पक्की तौर पर वो एक “युद्ध-नृत्य” लगा. उन्हें डर लगा.

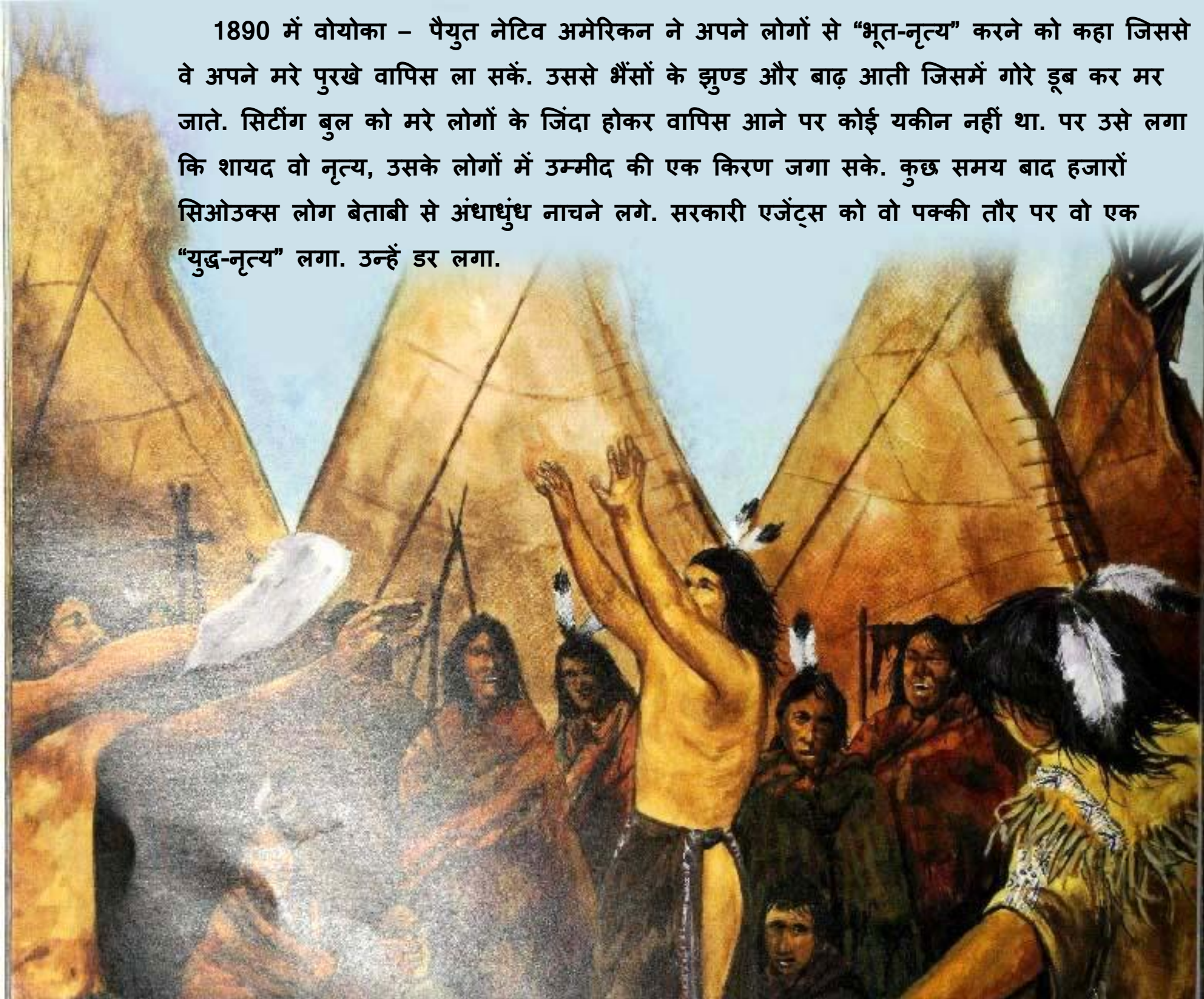

उन्हें लगा अगर युद्ध होगा तो उसका नेतृत्व ज़रूर बहादुर सिटींग बुल ही करेगा. इसलिए 15 दिसम्बर 1890 को उन्होंने सिटींग बुल को गिरफ्तार कर लिया. फिर सिटींग बुल के परिवार के सदस्य और उसके मित्र एकत्रित हुए. “मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा,” सिटींग बुल सरकारी एजेंट्स को देखकर चिल्लाया.

उसके बाद वहां दंगा-फसाद मचा. सिटींग बुल के बेटे “क्रो-फुट” को पलंग के नीचे से घसीटकर निकालकर मार डाला गया. उसमें सिटींग बुल और अन्य लोग भी मारे गए. पूरे इलाके में नेटिव अमेरिकंस ने सिटींग बुल की मौत पर शोक मनाया और “भूत-नृत्य” किया.

इस हादसे से हंकअप्पा सिओउक्स बुरी तरह घबरा गए. उन्होंने दौड़कर सिओउक्स चीफ बिग-फुट की शरण में जाने की तैयारी की पर 29, दिसम्बर 1890 को अमरीकी फौज ने उन्हें वुंडेड-नी क्रीक, साउथ डकोटा में फंसाया. दो-सौ से ज्यादा निहत्थे सिओउक्स मर्दों, महिलाओं और बच्चों को अमरीकी सेना ने गोलियों से भूना. नेटिव अमेरिकन ब्लैक एल्क ने, इस घटना को प्रत्यक्ष अपनी आँखों से देखा. उसने बहुत साल बाद लिखा, "मृत लोगों ने कभी किसी का कोई नुक्सान नहीं किया था. वे सिर्फ भागने की कोशिश कर रहे थे."

सिटींग बुल एक बहादुर नेटिव अमेरिकन था. लोग उसे उसके खुद के शब्दों में ही सबसे अच्छी तरह याद रखेंगे. 1890 में मृत्यु से कुछ समय पहले उसने कहा था, "रेड-इंडियन्स (आदिवासियों) लोगों के तौर-तरीके ही उनके लिए सबसे अधिक उपयुक्त हैं." 1892 में अमरीकी सेनेटर्स की कमिटी के सामने सिटींग बुल ने कहा था, "मेरा दिल रेड और मीठा है."

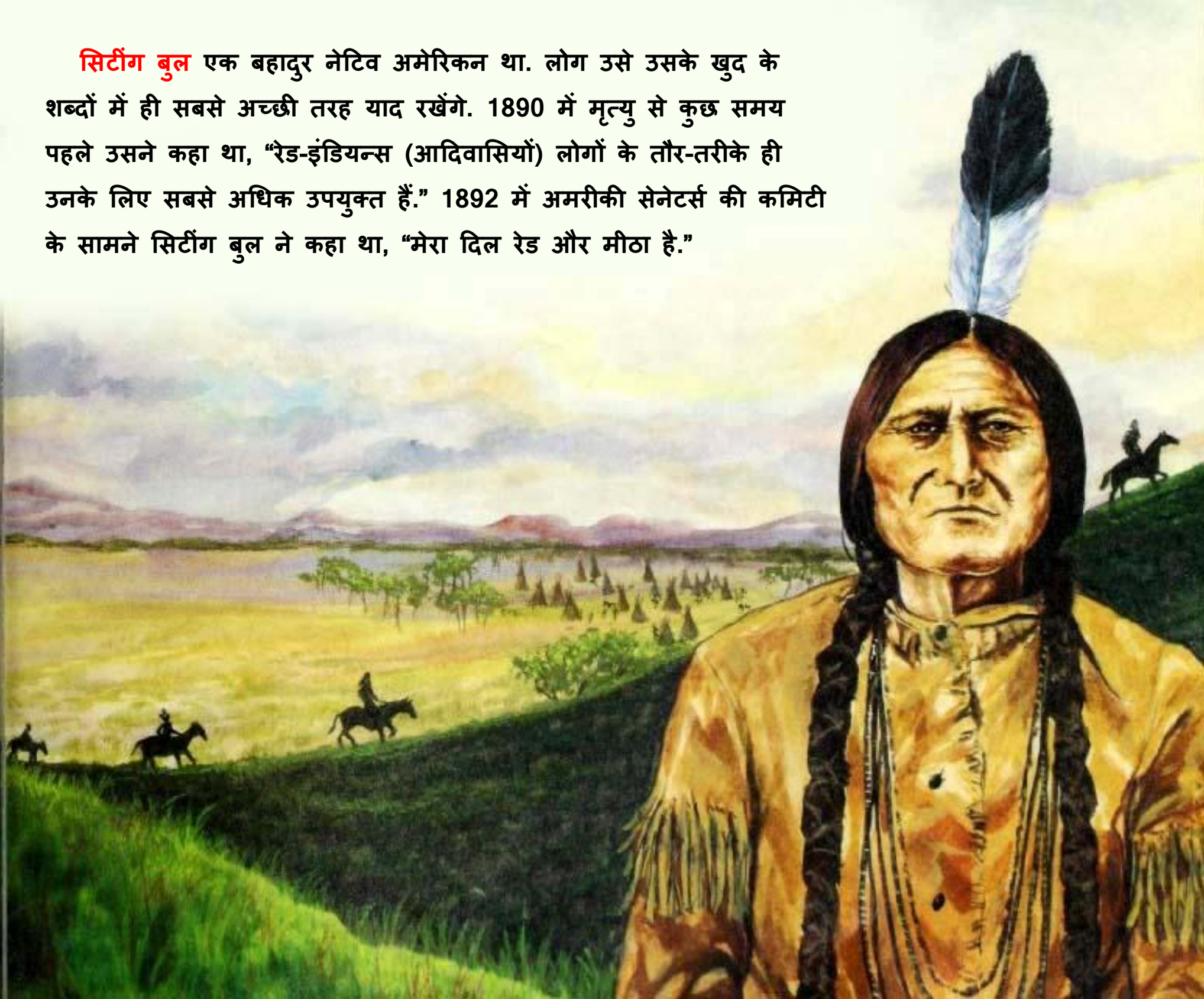

मुख्य तारीखें

1831	ग्रैंड रिवर, अमरीका में जन्म.
1841	पहले जंगली भैंसे का शिकार.
1845	नाम बदल कर "सिटींग बुल" पड़ा.
1864	अमरीकी सैनिकों ने जनरल अल्फ्रेड सुली के नेतृत्व में हुनकप्पा कैंप को जलाया.
1868	"द ग्रेट सिओउक्स रिजर्वेशन" बनाने पर हस्ताक्षर.
1870-80	जंगली भैंसों के आखरी झुंडों को भी मार कर ख़त्म किया गया.
1876	लिटिल बिगहॉर्न रिवर का युद्ध. इसमें लेफ्टिनेंट कर्नल जॉर्ज आर्मस्ट्रांग कस्टर की सेना को नेटिव अमेरिकंस ने हराया.
1877-81	कनाडा में प्रवास.
1881	अमेरिका वापिस आने पर गिरफ्तार.
1883	सिओउक्स रिजर्वेशन में जाकर रहने को मजबूर.
1885	अमरीका के कई शहरों का दौरा.
1890	15 दिसंबर को हत्या.
1890	29, दिसंबर को 200 निहत्थे सिओउक्स लोगों की वुंडेड-नी क्रीक, साउथ डकोटा में निर्मम हत्या.

लेखक का नोट

सिटींग बुल को भोजन के लिए जानवरों की ज़रुरत पड़ती थी, पर वैसे वो जानवरों का बहुत आदर करता था. किसी जानवर को मारने से पहले वो फुसफुसाता, “मेरे बच्चे भूखे हैं.” जब कभी उसे किसी जंगली भैंसे की हड्डियाँ दिखतीं तो वो आदर से कंकाल के सिर को सूरज की सीध में करता.

अमरीकी जंगली भैसें को अब जीवशास्त्री “बाईसन” बुलाते हैं. जो “बाईसन” कभी लुप्त होने की कगार पर थे अब उनकी आबादी बढ़ी है और अब उनके लुप्त होने का कोई खतरा नहीं है.

अमरीकी सरकार ने सिटींग बुल को हुनकप्पा सिओउक्स लोगों का चीफ माना. पर सिओउक्स लोगों के लिए वो मर्ज़ ठीक करने वाला वैद्य और उनका आध्यात्मिक गुरु था.

कुछ इतिहासकार इस बात पर प्रश्न उठाते हैं - कि क्या वाकई में सिटींग बुल ने वाइल्ड वेस्ट शो के दौरान मिले पैसे गरीब बच्चों को दिए? पर बहुत से लोगों का इस किंवदंती में यकीन है.

1492 को क्रिस्टोफर कोलंबस को अमरीका पहुँचने पर ऐसा लगा जैसे वो “इंडीज़” पहुँच गया हो, इसलिए उसने इन लोगों को “इंडियन्स” नाम दिया. पर यह लोग क्रिस्टोफर कोलंबस के आगमन से बहुत पहले से अमरीका में रह रहे थे. इसलिए नेटिव अमेरिकंस उनके लिए उपयुक्त नाम है.